शोध मंथन Vol. XIV No.III July-Sep. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

# वैश्वीकरण के दौर में शिक्षा प्रणाली मे ंप्रौद्योगिकी साक्षरता का अध्ययन

प्राप्तिः 28.08.2023
स्वीकृतः 17.09.2023

64

**प्रो० सुमन**
प्रिन्सिपल
एस०एन० सेन बी०वी० पी०जी० कॉलेज, कानपुर

**पूजा**
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग
रघुनाथ गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, मेरठ
ईमेलः *Drpoojaariya1995@ gmail.com*

*सारांश*

*सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उदय ने ई–कॉमर्स, ई–बैंकिग, ई–लर्निंग, ई–मेडिसिन और ई–गवर्नेंस को जन्म दिया है। यह घरेलू स्तर पर एक सार्वजनिक वस्तु नहीं है, बल्कि वैश्विक स्तर और तकनीकी अर्थव्यवस्था में शामिल करने के लिए प्रमुख उपकरण होने की उम्मीद है। भारत में शिक्षा प्रणाली के विवरण से यह देखा जा सकता है कि प्रौद्योगिकी साक्षरता को विषेश रूप से शिक्षा में और पूरे देश में एक बढ़ता हुआ महत्व दिया जा रहा है। शिक्षा में आईसीटी का परिचय अब वर्तमान शिक्षा प्रणाली को सुधारने और विकसित करने की दिशा में एक सरकारी ट्रॅापिज्म है। यह अध्ययन शिक्षकों के तकनीकी साक्षरता स्तर को समझने में मदद करेगा। भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए यह अध्ययन स्कूल के शिक्षकों के बीच प्रौद्योगिकी साक्षरता की हाल की स्थिति पर आधारभूत जानकारी प्रदान कर सकता है। वैष्वीकरण का सबसे अधिक प्रभाव युवाओं पर देखने को मिला हैं। आज के दौर में आधुनिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर युवाओं की जीवनशैली में बड़े बदलाव देखने को मिल रहे है। प्रस्तुत अध्ययन में वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन प्रौद्योगिकी साक्षरता पर किस प्रकार पड़ रहा है का अध्ययन किया गया है।*

*मुख्य बिन्दु*

*वैश्वीकरण, प्रौद्योगिकी साक्षरता, शिक्षा प्रणालीनई तकनीक इत्यादि।*

**प्रस्तावना**

शिक्षा कौशल और ज्ञान प्राप्त करने का एक अनिवार्य तरीका है। हमारी शिक्षा घर से शुरू होती है। इसके बाद, जैसे–जैसे हम बढ़ते हैं हम बच्चों के प्लेस्कूल या किंडरगार्टन, प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कॉलेज और अन्य शैक्षणिक संस्थानों में जाते हैं। शिक्षा मानव जीवन में रचनात्मक परिवर्तन लाती है। यह एक व्यक्ति के ज्ञान, बुद्धि और कौशल को बढ़ाता है और उसे एक सफल जीवन जीने में सक्षम बनाता है। शिक्षा केवल सूचनाओं का आदान–प्रदान नहीं है। शिक्षा का अर्थ है सभी शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करना। मनुष्य शिक्षा को ध्यान में रखता है वे सभी कारक मनुष्य को जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रभावित करते हैं। यहाँ, शिक्षक की भूमिका छात्रों के झुकाव को बढ़ाने और सुगम बनाने की है।

आज दुनिया एक छोटे से गांव में सिमट कर रह गई है और पूरे विश्व का परिदृश्य माउस बटन के एक छोटे से पर्दे पर आ गया है। 21वीं सदी में साक्षरता को कंप्यूटर साक्षरता के रूप में समझा जा रहा है। यदि ज्ञान शक्ति है तो आईसीटी ज्ञान का साधन प्रदान करता है।

**साहित्य का अवलोकन**

किसी भी क्षेत्र में ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि उससे सम्बन्धित ज्ञान का गहन अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाये, ताकि महत्वपूर्ण तथ्य एवं निष्कर्ष सरलता से प्राप्त हो सकें। शोध का अर्थ सत्य की खोज तथा उन प्रश्नों के उत्तर खोजना है जो कि ज्ञात नहीं है। इसी कारण सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन अति आवश्यक हो जाता है। यह अध्ययन शोधकार्य को आवश्यक सैद्धांतिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है। जुगा (1994) ने 1987–1993 के बीच शिक्षा में प्रौद्योगिकी में उपचार के असंतुलन की पहचान की। इस ''तकनीकी साक्षरता'' की कमियों में से एक यह है कि शिक्षक कक्षा शिक्षण में प्रौद्योगिकी के उपयोग से अनभिज्ञ हैं।

वुड, डब्ल्यू (2000), एक दृष्टिकोण वस्तु का मूल्यांकन है, जो अत्यंत नकारात्मक से अत्यंत सकारात्मक तक होता है। दृष्टिकोण पर अधिकांश समकालीन दृष्टिकोण यह भी अनुमति देते हैं कि लोग एक ही वस्तु के प्रति सकारात्मक और नकारात्मक दोनों दृष्टिकोणों को साथ–साथ धारण करके किसी वस्तु के प्रति परस्पर विरोधी या उभयलिंगी हो सकते हैं।

यूनेस्को की विश्व शिक्षा रिपोर्ट (1991) ने इंगित किया है कि आम जनता में जीवन की गुणवत्ता और बड़े पैमाने पर राष्ट्रव्यापी विकास के लिए शिक्षा के महत्व पर अंतर्राष्ट्रीय सहमति बढ़ रही है। यह व्यक्ति के समाजीकरण के साथ बौद्धिक विकास को जोड़ती है और बेहतर जागरूकता, अधिक खुलापन, सवाल करने की क्षमता और साहस और समाधान खोजने की कठोरता का मार्ग प्रशस्त करती है। दूसरे शब्दों में, शिक्षा को अपने दो आयामों के भीतर विकास अन्वेशण की आजीवन प्रक्रिया का नेतृत्व करना चाहिए, एक स्वयं और दूसरा समुदाय और व्यापक समाज।

सभी के लिए शिक्षा पर विश्व सम्मेलन (1990) में कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति, बच्चे, युवा और वयस्क को शैक्षिक अवसरों से लाभ उठाने में सक्षम होना चाहिए, जो उनके बुनियादी शिक्षण उपकरणों और सीखने की सामग्री को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है जो उनकी पूर्ण क्षमताओं को विकसित करने के लिए आवश्यक है।

कपूर (1998) के अनुसार, आईसीटी ने शिक्षा में क्रांति ला दी है। शिक्षक इंटरनेट पर पाठ्यक्रम के लिए एक निर्दिष्ट होम पेज में अपना असाइनमेंट दे सकते हैं और छात्र वहां से कॉपी कर सकते हैं या अपने कंप्यूटर से असाइनमेंट की मुद्रित प्रतियां प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षक द्वारा असाइनमेंट को सही करने के बाद, शिक्षक देता है असाइनमेंट, मार्किंग स्कीम और छात्रों द्वारा इंटरनेट पर की गई गलतियों का पूरा समाधान, ताकि छात्र न केवल अपने अंकों की जांच कर सकें, बल्कि यह भी जान सकें कि असाइनमेंट में दी गई समस्या में वे आमतौर पर किस प्रकार की गलतियां करते हैं। वास्तव में, कभी–कभी शिक्षक दिए गए मार्किंग असाइनमेंट स्कीम के अनुसार छात्रों को स्वयं असाइनमेंट को चिह्नित करने की अनुमति देते हैं और आमतौर पर शिक्षकों और छात्रों द्वारा स्वयं को दिए गए अंकों में अंतर बहुत कम होता है।

अध्ययन का उद्‌देश्य मूल योगदान वैश्वीकरण के दौर में युवाओं का विकास अंतर्दृष्टि को सामने लाना है। अनुसंधान के मुख्य उद्‌देश्य नीचे सूचीबद्ध हैं–

- वैश्वीकरण के दौर में युवाओं की प्रौद्योगिकी साक्षरता का पता लगाना।
- युवाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव एवं प्रौद्योगिकी साक्षरता दर के बीच सम्बन्ध की जांच करना।

**भारत में आईसीटी**

गार्गी बनर्जी (2014) के अनुसार, सूचना एवं संचार क्षेत्र में क्रांति विश्व को एकजुट कर रही है। आज की दुनिया में आईसीटी आर्थिक विकास के लिए एक प्रमुख पैरामीटर है। आईसीटी विभिन्न तरीकों से भारतीय राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में बहुत योगदान दे रहा है। भारत में लगभग सभी राज्य इस क्षेत्र को आर्थिक विकास के वाहन के रूप में लक्षित कर रहे हैं। इसलिए भारत को आईसीटी के संबंध ा में अपनी स्थिति में सुधार करना होगा यदि वह अपने विकास लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहता है।

**भारत में ई–लर्निंग**

प्रौद्योगिकी का विकास विशेषज्ञता पर नई मांग कर रहा है और शिक्षण और सीखने में सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते उपयोग की ओर भी अग्रसर है। वायरलेस कनेक्टिविटी, नोटबुक उनके डिजाइन और उपयोग, ई–लर्निंग से मीडिया लर्निंग तक का संक्रमण शैक्षणिक संस्थानों के सामने आने वाली चुनौतियों में से एक है। दुनिया वैश्वीकरण के दौर से गुजर रही है और किसी संगठन की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसके कार्यकर्ता कितनी जल्दी सीखने और आज के लिए आवश्यक विभिन्न कौशलों को प्रसारित करने में सक्षम हैं। भारत दूरसंचार अवसंरचना की बाध ााओं से ग्रस्त है, जैसे बैंडविड्थ की कमी, कम लीज आधारित लाइनें, सॉफ्टवेयर की उच्च लागत और धीमी सर्विसिंग, जो भारत में सूचना प्रौद्योगिकी के विकास में बाधाएँ पैदा करती हैं। हालांकि भारत में कॉर्पोरेट क्षेत्र में सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए ई–लर्निंग का उपयोग किया जा रहा है, फिर भी हमें अभी एक लंबा रास्ता तय करना है। गुरुकुल ऑनलाइन भारत में सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग के लिए पहला शैक्षिक पोर्टल है। वैश्वीकरण के दौर में युवा आधुनिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग किस क्षेत्र में कर रहे हैं, प्रस्तुत अध्ययन से ज्ञात होता है। मोबाईल संचार एवं बढ़ती तकनीकी उपलब्ध ाता एक विशेष संस्तुति की तरफ ले जा रही है। जिसमें प्रौद्योगिकी का दुरूपयोग अधिक सामने आ रहे हैं।

**सोशल मीडिया**

समूह वेबपेज, ब्लॉग, विकी, फेस बुक और ट्विटर शिक्षार्थियों और शिक्षकों को एक इंटरेक्टिव सीखने के माहौल में एक वेबसाइट पर विचार, और टिप्पणियां पोस्ट करने की अनुमति देते हैं। सोशल नेटवर्किंग साइट्स किसी विशेष विषय में रुचि रखने वाले लोगों के लिए वॉयस चेट, इंस्टेंट मैसेज, वीडियो कॉन्फ्रेंस या ब्लॉग द्वारा संवाद करने के लिए आभासी समुदाय हैं। नेशनल स्कूल बोर्ड्स एसोसिएषन ने पाया कि ऑनलाइन एक्सेस वाले 96% छात्रों ने सोशल नेटवर्किंग तकनीकों का उपयोग किया है, और 50% से अधिक स्कूल के काम के बारे में ऑनलाइन बात करते हैं। सोशल नेटवर्किंग सहयोग को प्रोत्साहित करती है।

**वेबकैम**

वेबकैम और वेबकास्टिंग ने वर्चुअल क्लासरूम और वर्चुअल लर्निंग माहौल बनाने में मदद की है। ई–लर्निंग वातावरण में होने वाली साहित्यिक चोरी और अकादमिक बेईमानी के अन्य रूपों का मुकाबला करने के लिए वेबकैम का भी उपयोग किया जा रहा है।

**व्हाइटबोर्ड**

प्रारंभिक व्हाइटबोर्ड, ब्लैकबोर्ड के अनुरूप, 1950 के दशक के उत्तरार्ध से हैं। व्हाइटबोर्ड शब्द का प्रयोग लाक्षणिक रूप से वर्चुअल व्हाइटबोर्ड को संदर्भित करने के लिए भी किया जाता है जिसमें कंप्यूटर सॉफ्टवेयर अनुप्रयोग लेखन या ड्राइंग की अनुमति देकर व्हाइटबोर्ड का अनुकरण करते हैं। यह वर्चुअल मीटिंग, सहयोग और इंस्टेंट मैसेजिंग के लिए ग्रुपवेयर की एक सामान्य विशेषता है। इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड शिक्षार्थियों और प्रशिक्षकों को टच स्क्रीन पर लिखने की अनुमति देते हैं। स्क्रीन मार्कअप या तो एक खाली व्हाइटबोर्ड या किसी कंप्यूटर स्क्रीन सामग्री पर हो सकता है। अनुमति सेटिंग्स के आधार पर, यह दृश्य शिक्षण इंटरैक्टिव और सहभागी हो सकता है, जिसमें इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड पर छवियों को लिखना और हेरफेर करना शामिल है।

**स्क्रीन कास्टिंग**

स्क्रीन कास्टिंग उपयोगकर्ताओं को अपनी स्क्रीन सीधे अपने ब्राउजर से साझा करने और वीडियो को ऑनलाइन उपलब्ध कराने की अनुमति देता है ताकि अन्य दर्शक सीधे वीडियो स्ट्रीम कर सकें। प्रस्तुतकर्ता इस प्रकार अपने विचारों और विचारों के प्रवाह को दिखाने की क्षमता रखता है, न कि उन्हें केवल सरल पाठ्य सामग्री के रूप में समझाता है। ऑडियो और वीडियो के संयोजन में, शिक्षक कक्षा के एक–एक अनुभव की नकल कर सकता है। शिक्षार्थियों के पास अपनी गति से समीक्षा करने के लिए रुकने और रिवाइज करने की क्षमता होती है, जो एक कक्षा हमेशा प्रदान नहीं कर सकती है।

**आभासी कक्षा**

एक वर्चुअल लर्निंग एनवायरनमेंट (वीएलई), जिसे एक लर्निंग प्लेटफॉर्म के रूप में भी जाना जाता है, एक साथ कई संचार तकनीकों को मिलाकर एक वर्चुअल क्लासरूम या मीटिंग का अनुकरण करता है। वेब कॉन्फ्रेंसिंग सॉफ्टवेयर छात्रों और प्रशिक्षकों को समूह सेटिंग में वेबकैम, माइक्रोफोन और रीयल–टाइम चौटिंग के माध्यम से एक–दूसरे के साथ संवाद करने में सक्षम बनाता है। प्रतिभागी हाथ उठा सकते हैं, मतदान का उत्तर दे सकते हैं या परीक्षा दे सकते हैं। शिक्षक द्वारा अधिकार दिए जाने पर छात्र व्हाइटबोर्ड और स्क्रीनकास्ट करने में सक्षम होते हैं, जो टेक्स्ट नोट्स, माइक्रोफोन अधिकार और माउस नियंत्रण के लिए अनुमति स्तर सेट करता है।

**शिक्षा प्रबंधन प्रणाली**

एलएमएस सॉफ्टवेयर है जिसका उपयोग प्रशिक्षण और शिक्षा देने, ट्रैक करने और प्रबंधित करने के लिए किया जाता है। यह उपस्थिति, कार्य पर समय और छात्र की प्रगति के बारे में डेटा ट्रैक करता है। शिक्षक घोषणाएँ पोस्ट कर सकते हैं, ग्रेड असाइनमेंट, पाठ्यक्रम गतिविधि की जाँच कर सकते हैं और कक्षा चर्चाओं में भाग ले सकते हैं। छात्र अपना काम जमा कर सकते हैं, पढ़ सकते हैं और चर्चा के सवालों का जवाब दे सकते हैं और क्विज ले सकते हैं।

**प्रशिक्षण प्रबंधन प्रणाली**

प्रशिक्षण प्रबंधन प्रणाली या प्रशिक्षण संसाधन प्रबंधन प्रणाली एक सॉफ्टवेयर है जिसे प्रशिक्षक के नेतृत्व वाले प्रशिक्षण प्रबंधन को अनुकूलित करने के लिए डिजाइन किया गया है। एंटरप्राइज रिसोर्स प्लानिंग (ईआरपी) के समान, यह एक बैक ऑफिस टूल है जिसका उद्देश्य प्रशिक्षण प्रक्रिया के हर पहलू को सुव्यवस्थित करना हैः योजना (प्रशिक्षण योजना और बजट)

(पूर्वानुमान), लॉजिस्टिक्स (शेड्यूलिंग और संसाधन प्रबंधन), वित्तीय (लागत ट्रैकिंग, लाभप्रदाता), रिपोर्टिंग और लाभ–लाभ प्रशिक्षण प्रदाताओं के लिए बिक्री। एक प्रशिक्षण प्रबंधन प्रणाली का उपयोग ग्राफिकल एजेंडा के माध्यम से प्रशिक्षकों, स्थानों और उपकरणों को शेड्यूल करने, संसाधन उपयोग को अनुकूलित करने, प्रशिक्षण योजना बनाने और शेष बजट को ट्रैक करने, रिपोर्ट तैयार करने और विभिन्न टीमों के बीच डेटा साझा करने के लिए किया जा सकता है। इंटरनेट सूचनाओं का खजाना है। व्यावहारिक रूप से आपको जो कुछ भी जानने की आवश्यकता है वह ऑनलाइन पाया जा सकता है। हालांकि स्रोत और प्रदान किए गए डेटा की विश्वसनीयता का सवाल है, फिर भी यह छात्रों के लिए एक शैक्षिक संसाधन के रूप में काम कर सकता है। माता–पिता और शिक्षकों की सहायता के बिना भी, छात्र अपने पाठों को ऑनलाइन देख सकते हैं। नियमित पाठ्यपुस्तकों के विपरीत, इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकें और वेब–आधारित सामग्री वास्तविक समय में अपडेट की जाती हैं, जिससे छात्रों को सबसे वर्तमान जानकारी मिलती है, जिससे उन्हें कक्षा सेटिंग के बाहर भी अधिक जानकार बनने में मदद मिलती है।

भविष्य डिजिटल और प्रौद्योगिकी केंद्रित होगा। यदि छात्र जल्द से जल्द सहयोग करने और संवाद करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में अच्छी तरह से वाकिफ हैं, तो उन्हें भविष्य में फिट होने, प्रतिस्पर्धा करने और नौकरी खोजने में परेशानी नहीं होगी। प्रयोग से परिचित होना कम उम्र में तकनीक का कम से कम एक रूप उन्हें इसका उपयोग करने में सहज होने में मदद करेगा, और अंततः अन्य नवीन उपकरणों और प्रक्रियाओं को संभालने के लिए आवश्यक अन्य कौशल विकसित करेगा। क्लासरूम के बजाय ऑनलाइन पढ़ाई करने पर ट्यूशन में भी कमी आएगी। उच्च शिक्षण शुल्क में योगदान करने वाले कारकों, जैसे कि उपयोगिता बिल और शिक्षकों के परिवहन भत्ते को हटाकर, शिक्षा की कुल लागत कम होगी। प्रौद्योगिकी सार्वभौमिक उपकरण भी प्रस्तुत करती है जो शिक्षकों को सभी प्रकार के छात्रों को शिक्षित करने में सक्षम बनाती हैं, जिनमें वे भी शामिल हैं जो संघर्ष कर रहे हैं या जिनकी विशेष आवश्यकताएं हैं। इनमें वॉयस रिकग्निशन, टेक्स्ट–टू–स्पीच कन्वर्टर, ट्रांसलेटर, वॉल्यूम कंट्रोल, वर्ड प्रेडिक्शन सॉफ्टवेयर और अन्य सहायक तकनीकें शामिल हैं। इंटरनेट की गति और डिवाइस की क्षमताओं में अंतर भी कुछ कठिनाइयों का कारण बन सकता है जो छात्रों को हतोत्साहित करेगा। इसमें अन्य चीजें जोड़ें जो वे ऑनलाइन खोजेंगे, जो पूरी तरह से स्कूल और शिक्षा से संबंधित नहीं हैं, और वे अंत तक विचलित नहीं होंगे।

**शैक्षिक प्रौद्योगिकी बनाम शिक्षा की प्रौद्योगिकी**

शिक्षा की प्रौद्योगिकी सीखने की प्रक्रियाओं के वैज्ञानिक ज्ञान के संसाधनों के व्यवस्थित अनुप्रयोग से संबंधित है जिससे ज्ञान प्राप्त करने और उपयोग करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को गुजरना पड़ता है। शिक्षा में शैक्षणिक प्रौद्योगिकी शिक्षा में तकनीकी हार्डवेयर के उपयोग को संदर्भित करती है।

**डिजिटल और आईसीटी साक्षरता**

कंप्यूटर अनुप्रयोगों पर जोर दिया गया है क्योंकि कंप्यूटर (और इसी तरह के उपकरण) को आईसीटी का एक महत्वपूर्ण तत्व माना गया है। आईसीटी साक्षरता एक ज्ञान समाज में कार्य करने के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी, संचार उपकरण, नेटवर्क का उपयोग, प्रबंधन, एकीकरण, मूल्यांकन और जानकारी बनाने के लिए उपयोग कर रहा है। – (अंतर्राष्ट्रीय आईसीटी साक्षरता पैनल, 2002)

**कंप्यूटर साक्षरता**

कंप्यूटर साक्षरता अन्य साक्षरता के साथ अधिक सामान्य आधार पा रही है। इसे डिजिटल टेक्स्ट के साथ साक्षरता के रूप में वर्णित किया गया है। चूंकि डिजिटल पाठ और उनकी अनूठी विषेशताएं संचार और सूचना वितरण का एक महत्वपूर्ण साधन बन जाती हैं, डिजिटल पाठ के साथ साक्षरता को साक्षरता के एक घटक के रूप में षामिल किया जाएगा। साक्षरता की व्यापक समझ में कंप्यूटर से इसके एकीकरण की ओर ध्यान केंद्रित हो रहा है।

**शिक्षक का रवैया**

शब्द रवैया (लैटिन एपटस से) सामाजिक मनोविज्ञान के ढांचे के भीतर कार्रवाई के लिए एक व्यक्तिपरक या मानसिक तैयारी के रूप में परिभाषित किया गया है। यह बाहरी और दृश्य मुद्राओं और मानवीय विश्वासों को परिभाषित करता है। दृष्टिकोण निर्धारित करते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति क्या देखेगा, सुनेगा, सोचेगा और क्या करेगा? वे अनुभव में निहित हैं और स्वतः नियमित आचरण नहीं बनते।

**एम–लर्निंग के लाभ**

एम–लर्निंग सुविधाजनक है क्योंकि यह वस्तुतः कहीं से भी सुलभ है। समान सामग्री का उपयोग करने वाले सभी के बीच साझा करना लगभग तात्कालिक है, जिससे तत्काल प्रतिक्रिया और सुझावों का स्वागत होता है। एम–लर्निंग किताबों और नोट्स को छोटे उपकरणों से बदलकर मजबूत पोर्टेबिलिटी भी लाता है, जो सीखने की सामग्री से भरा होता है। एम–लर्निंग में लागत प्रभावी होने का अतिरिक्त लाभ है, क्योंकि पारंपरिक मीडिया (किताबें, सीडी और डीवीडी, आदि) की तुलना में टैबलेट पर डिजिटल सामग्री की कीमत बहुत कम है। दुनिया भर के स्कूलों, कार्यस्थलों, संग्रहालयों, शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में मोबाइल लर्निंग का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। पारंपरिक कक्षा शैक्षणिक दृष्टिकोणों की तुलना में, मोबाइल लर्निंग सीखने के समय, स्थान, पहुंच और संदर्भ के लिए व्यापक अवसरों की अनुमति देता है।

**शिक्षा में नई तकनीक**

तकनीक ने कक्षा में चीजों को प्रस्तुत करने और पढ़ाने के तरीके को बहुत प्रभावित किया है। यह उन सामग्रियों पर प्रभाव डालता है जिनका उपयोग किया जाता है और जिस तरह से हम इन सामग्रियों का उपयोग स्कूलों में पढ़ाने के लिए करते हैं। आज की कक्षा में जो कुछ भी उपयोग किया जाता है वह प्रौद्योगिकी का परिणाम है। प्रौद्योगिकी में कई उन्नतियां हैं जो अब कक्षा में उपयोग की जाती हैं और शिक्षण प्रक्रिया के लिए बहुत फायदेमंद रही हैं। प्रौद्योगिकी ने, कभी–कभी, कक्षा में चीजों से निपटने का एक आसान और फिर भी अधिक जटिल तरीका दोनों की अनुमति दी है।

आईसीटी के इस उभरते हुए युग में, नई प्रौद्योगिकियां बार–बार फल–फूल रही हैं। आजकल, मोबाइल ऐप्स कुछ रचनात्मक सीखने का अनुभव भी देते हैं। यह जानना मुश्किल है कि वास्तव में क्या पकड़ में आएगा और क्या नहीं, लेकिन निम्नलिखित सूची में कुछ उभरती हुई नई तकनीकों, सॉफ्टवेयर और उपलब्ध प्लेटफार्मों को दिखाया गया है। अपने नवाचार और व्यावहारिकता के साथ, इनमें से कई कक्षा में प्रवेश करने और छात्रों और शिक्षकों के सीखने के तरीके को स्थायी रूप से बदलने के लिए तैयार हैं।

## अध्ययन का औचित्य

प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से वैश्वीकरण के दौर में प्रौद्योगिकी की साक्षरता की विशेषतः युवा वर्ग में जांच करना है तथा लेख के माध्यम से यह पता लगाना है युवा प्रौद्योगिकी का प्रयोग अपने लिये किस क्षेत्र में विकास की दिशा में कर रहे है ताकि समाज की मुख्य धारा का पता लगाया जा सके तथा विशम परिस्थितियों से बचाने के उपाय खोजे जा सकें। युवाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव अंतर है। पहले जहाँ सीमित आवश्यकतायें थी व उनकी पूर्ति के साधन भी सीमित थे, पर आज तीव्र परिवर्तनों ने साधनों में प्रतिकूल बढोत्तरी की है, वहीं आवश्यकताओं में भी वृद्धि हुई है। आज आधुनिक युग में कैसे युवा अपनी प्रौद्योगिकी जरूरतों की पूर्ति कर रहा है!

## अध्ययन की उपादेयता

नई पीढ़ी की एक बड़ी त्रासदी यह है कि पाश्चात्य सभ्यता के अनुसरण के कारण हम भौतिक रूप से तो विकसित हो चुके हैं लेकिन आज भी परम्परागत सोच युवाओं के प्रति हमारे मस्तिष्क में जड़ जमाऐ हुए हैं, जहां आज हम सूचना क्रांति के दौर में जीवन–यापन कर रहे हैं। यदि वर्तमान परिस्थितियों में सामाजिक विचारधारा के प्रभाव का व्यक्ति के जीवन में व्याप्त अनियमित्ताओं एवं अस्वस्थता के कारणों का पता लगाया जा सकता है, तो उनके निवारण का भी प्रयास किया जा सकता है। यह भी ज्ञात किया गया है कि वर्तमान समाज में सामाजिक विचारधारा के किस स्वरूप का सर्वाधिक प्रभाव सामाजिक संरचना पर पड़ता है।

## निष्कर्ष

वैश्वीकरण वैश्विक व्यापार का पर्याय नहीं है, बल्कि उससे कहीं अधिक है। आज युवा वर्ग में प्रौद्योगिकी साक्षरता दर क्या है इसका पता लगाने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि युवा वर्ग में प्रौद्योगिकी साक्षरता की दर तेजी से बढ़ रही है लेकिन प्रौद्योगिकी साक्षरता का प्रभाव युवा गलत दिशा में अधिक कर रहे हैं। डिजिटल डिवाइड के चलते प्रौद्योगिकी साक्षरता के क्षेत्र में विशमता देखने को मिलती है। तथा एक बहुत बड़ा युवा वर्ग प्रौद्योगिकी का उपयोग सकारात्मक दिशा में नहीं कर रहा है। प्रस्तुत शोध अध्ययन से पता चलता है कि आज युवा अपना अधिक समय प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल कर रहे है जिसके कारण उनके जीवन में काफी समस्यायें आने वाली हैं। जिसमें इन्टरनेट एडीक्सन, मोबाइल की लत तथा नकारात्मक दिशा में प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल बढ़ रहा है। जो युवा पीढ़ी के भविष्य के लिए खतरनाक हो गया आज युवाओं के प्रौद्योगिकी साक्षरता के पर्याप्त स्तर है लेकिन युवाओं का प्रयोग करने की दिशा नकारात्मक पायी गयी है।

## संदर्भ

1. प्रकाश, रवि. (2005). ''वैश्वीकरण एवं समाज''. शेखर प्रकाशनः इलाहाबाद. पृष्ठ 315.
2. इण्डा, जान्थन सेस्वीयर., रीनाल्टी. (2002). एन्थ्रीपोलॉजी ऑफ ग्लोबलाइजेशन. ए, रीडर आक्सफोर्ड ब्लैक वेल पब्लिशर्स. पृष्ठ 2.
3. राबट्सन, आर. (1998). ग्लोबलाइजेशन, ''सोशल थियरी एण्ड ग्लोबल क्लचर''. सेज पब्लिकेशन्सः लन्दन. पृष्ठ 64.
4. फ्राइडमैन, थॉमस. (1999). ''ग्लोबलाइजेशन, द लेक्सस एण्ड द ओलिव ट्री न्यूयार्क, फार स्ट्रौस जिराक्स. पृष्ठ 110.

5. पाण्डेय, रवि प्रकाश. (2004). कन्क्लूजीव सिनॉप्सीस ऑफ इण्टरनेशनल सेमिनार ऑन ग्लोबलाइजेशन पावर्टी. हेल्ड ऑन 4–6 दिसम्बर. आर्गनाइज्ड वाई.एम.जी. काशी विद्यापीठः वाराणसी. पृष्ठ 01.
6. Government of India. (1997-2002). Approach Paper to the Ninth five Year Plan: Planning Commission. New Delhi.
7. Green A. (2006). 'Education, globalization, and the nation state'. in laubder H, Brown P, Dillabough J, and Halsey A H (eds) Education, globalization and social change, Oxford: Oxford University Press.
8. InternationalJournal of Applied Reseach http://www.allresearchjournal.com.